nava graha karAvalamba stotram

नवग्रह करावलम्बस्तोत्रम्

Document Information

Text title : nava graha karaavalamba stotram

File name : navagrahakaraa.itx

Category : navagraha, stotra, nava

Location : doc_z_misc_navagraha

Author : Traditional

Transliterated by : P.V.R Narasimha Rao

Proofread by : P.V.R Narasimha Rao

Latest update : August 23, 2000

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 14, 2022

sanskritdocuments.org

नवग्रह करावलम्बस्तोत्रम्

ज्योतीश देव भुवनत्रय मूलशक्ते
गोनाथ भासुर सुरादिभिरीद्यमान ।
नृणांश्च वीर्य वर दायक आदिदेव
आदित्य वेद्य मम देहि करावलम्बम् ॥ १॥

नक्षत्रनाथ सुमनोहर शीतलांशो
श्री भार्गवी प्रिय सहोदर श्वेतमूर्ते ।
क्षीराब्धिजात रजनीकर चारुशील
श्रीमच्छशांक मम देहि करावलम्बम् ॥ २॥

रुद्रात्मजात बुधपूजित रौद्रमूर्ते
ब्रह्मण्य मंगल धरात्मज बुद्धिशालिन् ।
रोगार्तिहार ऋणमोचक बुद्धिदायिन्
श्री भूमिजात मम देहि करावलम्बम् ॥ ३॥

सोमात्मजात सुरसेवित सौम्यमूर्ते
नारायणप्रिय मनोहर दिव्यकीर्ते ।
धीपाटवप्रद सुपंडित चारुभाषिन्
श्री सौम्यदेव मम देहि करावलम्बम् ॥ ४॥

वेदान्तज्ञान श्रुतिवाच्य विभासितात्मन्
ब्रह्मादि वन्दित गुरो सुर सेवितांघ्रे ।
योगीश ब्रह्म गुण भूषित विश्व योने
वागीश देव मम देहि करावलम्बम् ॥ ५॥

उल्हास दायक कवे भृगुवंशजात
लक्ष्मी सहोदर कलात्मक भाग्यदायिन् ।
कामादिरागकर दैत्यगुरो सुशील
श्री शुक्रदेव मम देहि करावलम्बम् ॥ ६॥

शुद्धात्म ज्ञान परिशोभित कालरूप
छायासुनन्दन यमाग्रज क्रूरचेष्ट ।
कष्टाद्यनिष्ठकर धीवर मन्दगामिन्
मार्तंडजात मम देहि करावलम्बम् ॥ ७॥

मार्तंड पूर्ण शशि मर्दक रौद्रवेश
सर्पाधिनाथ सुरभीकर दैत्यजन्म ।
गोमेधिकाभरण भासित भक्तिदायिन्
श्री राहुदेव मम देहि करावलम्बम् ॥ ८॥

आदित्य सोम परिपीडक चित्रवर्ण
हे सिंहिकातनय वीर भुजंग नाथ ।
मन्दस्य मुख्य सख धीवर मुक्तिदायिन्
श्री केतु देव मम देहि करावलम्बम् ॥ ९॥

मार्तंड चन्द्र कुज सौम्य बृहस्पतीनाम्
शुक्रस्य भास्कर सुतस्य च राहु मूर्तेः ।
केतोश्च यः पठति भूरि करावलम्ब
स्तोत्रम् स यातु सकलांश्च मनोरथारान् ॥ १०॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ ॐ तत् सत् ॥

Composed by P.V.R Narasimha Rao of http://www.sjvc.net/

nava graha karAvalamba stotram

pdf was typeset on September 14, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*